

मनन-सत्र द्वारा जीवन कौशलों का संवर्धन

ऋषभ कुमार मिश्र*

वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा को सुधारने के लिए दिए जाने वाले सुझावों में से एक सुझाव है कि विद्यार्थियों को सक्रिय कर्ता मानते हुए उनके मतों, विचारों और विश्वासों को सुना जाए। विद्यार्थियों को विद्यालय के अभ्यासों और प्रक्रियाओं में सम्मिलित करते हुए भागीदार बनाया जाए। इस दिशा में प्रयास करते हुए विद्यालयों द्वारा प्रार्थना सभा, बाल सभा और चेतना सत्र जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, लेकिन प्रायः ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के विचारों को सुनने और उन्हें निर्णय प्रक्रिया का भागीदारी बनाने में प्रतीकात्मक भूमिका निभाती हैं। इस स्थिति में महत्वपूर्ण सवाल है कि इन मंचों को विद्यार्थियों की विचाराभिव्यक्ति, मनन और संवाद के लिए कैसे प्रासंगिक बनाया जा सकता है? मनन-सत्र के माध्यम से कैसे विद्यार्थियों के विचारों, मतों और विश्वासों को संबोधित किया जा सकता है? कैसे विद्यार्थियों को विद्यालय और समुदाय से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर विमर्श और निर्णय करना सिखाएँ? इस दिशा में आनंद निकेतन विद्यालय (नागपुर में) द्वारा संचालित मनन-सत्र एक प्रमुख प्रयोग है। इस लेख में किये गए प्रयोग द्वारा यह विश्लेषित किया गया है कि कैसे आनंद निकेतन में संचालित मनन-सत्रों में विद्यार्थियों की विचाराभिव्यक्ति और उनकी भागीदारी द्वारा जीवन कौशलों को संवर्धित किया जा सकता है?

हमारी कक्षाओं में हर रोज विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं। वे विद्यालय की प्रार्थना से लेकर कक्षा कार्य करने, गृहकार्य, समय सारिणी के अनुसार विविध गतिविधियों में भागीदारी, अध्यापकों के निर्देशों को सुनने और उनके द्वारा तय की गई कसौटी के अनुसार व्यवहार करने में पूरा दिन बिता देते हैं। अंततः वे विद्यालय की दिनचर्या को पूरा करके घर वापस चले जाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में वे 'सीख' रहे

हैं, लेकिन यह सीखना केवल साक्षरता को अर्जित करना है। नेल नॉडिंग्स (2005) जैसे शिक्षाविद् इस व्यवस्था की आलोचना करते हुए बल देते हैं कि इससे विद्यार्थी सख्त अनुशासन में अधिक अंक प्राप्त कर परीक्षाएँ तो उत्तीर्ण कर सकते हैं, लेकिन उनके जीवन की स्वाभाविकता, उसमें समानुभूति, समूह-बोध, परस्पर विश्वास करने, सौहार्द्रपूर्ण सहजीवन जैसी प्रवृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं। इस

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

आलोचना के मूल में यह मान्यता है कि विद्यार्थी भी एक सक्रियकर्ता हैं जो केवल अध्यापकों और अभिभावकों के लिए फैसलों का पालन और अनुगमन मात्र नहीं करते हैं, बल्कि उनकी विश्वदृष्टि होती है, जो उनके लिए और उनके द्वारा लिए जाने वाले फैसलों में संमिलित होनी चाहिए। उक्त आलोचना के विकल्पस्वरूप ही सुझाया जाता है कि विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों को विचाराभिव्यक्ति, मनन और संवाद का अवसर देकर उनके अनुभवों, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को जाना जा सकता है (फ्लूटर और रूडक, 2004)। इस तरह के अभ्यास विद्यालय स्तर पर लोकातांत्रिक प्रक्रियाओं के अभ्यास और विद्यार्थियों को सक्रिय नागरिकता की शिक्षा का अवसर देने के लिए भी उपयोगी होते हैं (जीरू, 1992; फ्लूटर, 2007)। मित्रा (2006) ने विद्यालय में विद्यार्थियों के विचाराभिव्यक्ति के तीन स्तर पहचाने हैं। पहला, जहाँ विद्यार्थियों को विचाराभिव्यक्ति का मौका मिलता है और उनके विचारों को प्रतिपुष्टि की तरह देखा जाता है। दूसरा, शिक्षक अपने शिक्षण या कक्षानुशासन जैसे विषयों पर विद्यार्थियों से बातें तो करते हैं, लेकिन उन पर अपना विचार थोपते हैं। तीसरा, विद्यार्थियों को बराबरी का दर्जा देते हुए शिक्षक उनके साथ मिलकर विचार-विमर्श करते हैं, फैसले लेते हैं और उन्हें मिलकर क्रियान्वित करते हैं। विद्यार्थियों के विचाराभिव्यक्ति और उनके साथ चर्चा के मंच हर विद्यालय में होते हैं। प्रार्थना सभा, बाल सभा, चेतना सत्र जैसी गतिविधियाँ अधिकांश विद्यालयों में होती हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश गतिविधियाँ

उक्त चर्चित प्रारूपों में पहले दो रूपों में ही अधिक होती हैं। इस कारण ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के लिए प्रतीकात्मक बन कर रह जाती हैं। कुक-साथर (2006) का मानना है कि विद्यार्थियों को इस तरह से अवसर दिए जाएँ कि वे विद्यालय और कक्षा के अभ्यासों के आलोचक, सृजनात्मक सुझाव देने वाले और सुधारों को क्रियान्वित करने वाले बनें। इसके लिए आवश्यक है कि एक व्यक्ति के रूप में विद्यार्थी की अस्मिता और अनुभवों के प्रति संमान का भाव रखा जाए। उनके बोलने और हस्तक्षेप करने को उदारतावादी बाल केंद्रित शिक्षण के अर्थ में समझने के बजाय उनका अधिकार समझा जाए। उन्हें किसी भी स्थिति में अनसुना न किया जाए। ऐसा करने पर वे विद्यालय के बाहर की संरचनात्मक बाधाओं, उत्पीड़न और शोषण की संभावनाओं का मुकाबला करने के लिए तैयार हो सकेंगे। फिल्लिंग (2007) का मानना है कि विद्यार्थियों के विचारों और मतों पर मनन कर उन्हें खुद और दुनिया के बारे में सोचने के बारे में सचेत किया जाना आवश्यक होता है। विद्यार्थियों को विचाराभिव्यक्ति का मौका देने वाले मंचों में उन्हें वयस्कों की निगरानी, नियंत्रण और उपदेशों के प्रवचन से भी बचाना चाहिए।

शोध प्रश्न और विधि

उपर्युक्त संदर्भ और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को संज्ञान में लेते हुए प्रस्तुत लेख आनंद निकेतन विद्यालय के मनन-सत्रों की व्याख्या और विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से विवेचना की गई है कि आनंद निकेतन में संचालित मनन-सत्रों के द्वारा कैसे

विद्यार्थियों के जीवन कौशलों को संवर्धित किया गया? यह शोध कार्य महाराष्ट्र के वर्धा जिले में स्थित आनंद निकेतन विद्यालय में पूर्ण किया गया है। आनंद निकेतन विद्यालय 'नई तालीम' के सिद्धांतों के आधार पर संचालित किया जाता है। इस विद्यालय में आसपास के गाँवों से बच्चे आते हैं। इस विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी किसान परिवारों से हैं। प्रस्तुत लेख 'नई तालीम' आधारित अधिगम संस्कृति, शीर्षक से संचालित वृहद् शोध परियोजना का हिस्सा है। इसके लिए आनंद निकेतन में संचालित मनन-सत्रों का सहभागी अवलोकन किया गया। इन अवलोकनों के आधार पर क्षेत्र टिप्पणियों को तैयार कर विश्लेषित किया गया है। अवलोकन के साथ-साथ अध्यापकों और विद्यार्थियों से अनौपचारिक बातचीत द्वारा भी आँकड़ें संकलित किए गए हैं।

मनन-सत्र की विशेषताएँ

आनंद निकेतन में प्रत्येक शुक्रवार को मनन-सत्र का आयोजन किया जाता है। इसका आयोजन कक्षा एक

से कक्षा दस तक की कक्षाओं में होता है। इस सत्र के विषय का निर्धारण अध्यापक और विद्यार्थी मिलकर करते हैं। ये विषय विद्यार्थियों के रोजमर्रा के जीवन, सामुदायिक एवं समसामयिक विषयों एवं विद्यालय से जुड़े होते हैं। इन सत्रों की अवधि 40-50 मिनट की होती है।

प्रायः शिक्षक ही आनंद सत्रों का संचालन करते हैं, लेकिन यह भी देखा गया कि बड़ी कक्षाओं में विद्यार्थियों को भी स्वतंत्र रूप से संचालन का जिम्मा दिया जाता है। कई बार विद्यार्थी स्वयं मनन-सत्र के लिए विषय सुझाते हैं। मनन-सत्रों के अंतर्गत अध्यापक विद्यार्थियों के साथ और उनके बीच संवाद को स्थापित करने का प्रयत्न करता है। मनन-सत्रों को शिक्षक अपने शिक्षण और विद्यालय की गतिविधियों के प्रतिपुष्टि सत्र की तरह भी देखते हैं।

आनंद निकेतन में मनन-सत्र की सफलता का एक कारण इसकी नियमितता किंतु स्वाभाविकता एवं सुनम्यता है। मनन-सत्रों के अवलोकनों से पता चलता है कि इसमें होने वाली खुली बातचीत में भाग लेने

तालिका 1— मनन-सत्र के विषय

विषय	उदाहरण
आत्म जागरूकता से संबंधित	अपनी स्वच्छता, अपना सामर्थ्य, स्वयं का कार्य स्वयं करें, घरेलू कार्यों में सहभागिता, आत्म-विकास, आशावादिता
विद्यालय और कक्षा	मेरी शाला कैसे बेहतर हो?, मेरी कक्षा कैसी हो?, कक्षा के नेतृत्वकर्ता का चुनाव (क्यों जरूरी और कैसे करें), समय सारिणी और उत्पादक कार्य
गाँधी-विचार	स्वावलंबन, गाँधी के चार व्रत (सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह)
अंतरव्यैक्तिक संबंध	किसी के साथ व्यवहार कैसा करें?, दोस्तों और सहपाठियों द्वारा चिढ़ाना, गुटबाजी और उसके परिणाम, शिक्षकों के साथ संबंध
समसामयिक मुद्दे	दिवाली, पटाखे और प्रदूषण, अंधविश्वास और विज्ञान, महिलाओं के प्रति हिंसा, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट, गणपति विसर्जन

के लिए विद्यार्थी उत्साहित रहते हैं। इसके संचालन में अनुशासन या संवाद की कोई कठोर परिपाटी नहीं रहती है। मनन-सत्र के बाद यदि समूह कोई फैसला लेता है तो उसे मिलकर क्रियान्वित करता है। मनन-सत्र के माध्यम से विद्यार्थी अपनी कक्षा, विद्यालय और अपने परिवेश में बदलाव की छोटी-छोटी संभावनाओं को साकार करते हैं। इन मनन-सत्रों का विश्लेषण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

समर्थता के बोध का विकास

मनन-सत्रों के द्वारा विद्यार्थियों में यह बोध पोषित किया गया कि वे विद्यालय के एक महत्वपूर्ण भागीदार हैं। वे ज्ञान और कौशल से युक्त अधिगमकर्ता हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने और कार्यों को नियोजित करने के लिए भी सचेत किया गया। इस तरह के सत्र प्राथमिक कक्षाओं में अधिक होते थे। इनके अंतर्गत आत्म-विकास, आशावादिता, करियर का चुनाव जैसे विषयों पर मनन किया जाता है। ये सत्र कई बार सुझावात्मक भी हो जाते थे। इन सत्रों में विद्यालय की गतिविधियों के महत्व से भी परिचित कराया जाता था। इसमें विशेष रूप से बल दिया जाता था कि सफाई, कृषि, रसोई जैसे उत्पादक कार्य कैसे विद्यार्थियों को समर्थ बनाते हैं। इन सत्रों में कार्यों की प्राथमिकता तय करना, समय का प्रभावी उपयोग करना, अपने लिए निर्णयों का क्रियान्वयन, अपनी मजबूतियों एवं कमजोरियों को पहचानने जैसे अभ्यासों पर बल दिया गया। इनमें उत्पादक कार्यों के सृजनात्मकता से संबंध, प्रायोगिक और अनुप्रयोगात्मक ज्ञान से जुड़ाव, और

अपने परिवेश को समझने के माध्यम जैसे गुणों पर चर्चा की गई।

समर्थता के बोध के लिए व्यक्तिगत विशेषताओं और क्षमताओं के प्रति सजगता के साथ सामूहिकता का बोध होना आवश्यक है। कई बार विद्यार्थी कक्षा की विविधता की सराहना नहीं कर पाते हैं। वे कक्षा में एक-दूसरे को चिढ़ाने लगते हैं। वे दोस्तों का छोटा समूह और बंद समूह बना लेते हैं। ऐसी ही घटनाएँ आनंद निकेतन विद्यालय में भी हो रहीं थीं। इन घटनाओं को देखते हुए मनन-सत्र में विचार कर आम सहमति से रोकने का फैसला किया गया। इसके लिए विद्यालय में उक्त विषयों से संबंधित मनन-सत्रों का आयोजन किया गया। इनमें से एक सत्र के अवलोकन के दौरान पाया गया कि शिक्षक द्वारा सबसे पहले कक्षा के छात्रों की विविधता का वर्णन, करते हुए प्रश्न उठाया गया—“हमारी कक्षा में कोई छोटा है, कोई बड़ा है, कोई मोटा है, कोई तेज बोलता है, कोई धीरे से बोलता है, किसी की भाषा मराठी नहीं है, कोई दूसरी भाषा का है, कोई लड़का है, कोई लड़की है, कोई किसी धर्म का है, कोई किसी जाति का है। क्या इन सभी आधारों पर किसी भी तरह का भेदभाव होना चाहिए?” इस पर सभी विद्यार्थियों ने असहमति व्यक्त की। उनकी असहमति को प्रशंसा करते हुए शिक्षक ने कहा कि इसी कक्षा के कुछ लड़के और लड़कियाँ किसी विद्यार्थी को उसके मोटे होने पर चिढ़ाते हैं। शिक्षक ने कक्षा से कहा कि जो विद्यार्थी इस तरह का व्यवहार करते हैं? वे इससे क्या हासिल करते हैं? और उसके परिणाम क्या होते हैं? इस पर विद्यार्थियों ने कहा कि—

“जिसे चिढ़ाया जाता है, उसे बुरा लगता है। कक्षा में विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक संबंध खराब होते हैं।”

“जब कक्षा में विद्यार्थी आपस में अच्छे से व्यवहार नहीं करते, मिलजुल कर नहीं रहते तब शिक्षकों को भी पढ़ाने में समस्याएँ आती हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि कक्षा बटी हुई है और इसमें कक्षा को एक करके पढ़ाना मुश्किल कार्य हो जाता है।”

इस विषय का विस्तार करते हुए शिक्षक ने कक्षा के साथ विचार किया कि विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक संबंध कैसे अच्छा बने? इस पर कक्षा ने कुछ सूत्र तय किए। जैसे—

“हमें यह समझना चाहिए कि हम सीखने, जीने, खेलने, बात करने की प्रक्रिया में एक साथ हैं और हम एक दूसरे को सिखा सकते हैं।”

“हमें किसी भी साथी के साथ गालियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।”

“यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में अधिक अंक पाता है, कम अंक पाता है उस आधार पर हमें भेदभाव नहीं करना चाहिए, बल्कि सबके साथ अच्छे से संबंध रखने चाहिए।”

“हमें किसी भी साथी के साथ उसके रंग-रूप, धर्म, जाति, पहनावे, खान-पान, भाषा के आधार पर चिढ़ाना नहीं चाहिए।”

एक विद्यार्थी ने उक्त विचारों को सारांश प्रस्तुत करते हुए कहा कि ये तोड़ने के बजाए जोड़ने वाले विचार हैं। इन्हें अपनाने पर हमारा आपसी रिश्ता मजबूत होगा। इस तरह के सत्र विद्यार्थियों में विविधता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति में भी योगदान करने

में मदद करते हैं। विद्यार्थी स्वयं की विशेषताओं और कमजोरियों को जानने के साथ-साथ अपने समूह और साथियों को महत्वपूर्ण ‘अन्य’ के रूप में स्वीकारते हैं। यह स्वीकृति आत्म-केंद्रिकता से समष्टि भाव की ओर ले जाती है। विद्यार्थियों में समष्टि भाव के कारण ही वे किसी भी योजना को निर्मित और क्रियान्वित कर पाते हैं। इन सत्रों से विद्यार्थी आश्वस्त भी होते हैं कि वे जो बोलते हैं, उसे सुना जाता है।

मौलिक विचाराभिव्यक्ति

विद्यालय द्वारा संचालित मनन-सत्रों में पाया गया कि विद्यार्थियों ने स्वावलंबन, श्रम की प्रतिष्ठा और वैचारिक स्वराज जैसे विषयों, जो विद्यालय द्वारा प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार्य मूल्य हैं, उनके बारे में मौलिक आत्माभिव्यक्ति की गई। इसके समर्थन में स्वावलंबन से संबंधित विद्यार्थियों के निम्नलिखित उद्धरण देख सकते हैं—

विद्यार्थी 1— स्वावलंबन से तात्पर्य स्वयं की जरूरत से संबंधित कार्यों में कुशलता के साथ ही साथ उन कार्यों को करने की प्रतिबद्धता निहित होनी चाहिए।

विद्यार्थी 2— स्वावलंबन में व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के साथ सामाजिक जिम्मेदारियाँ भी निहित हैं। जैसे—स्वरोजगार का निर्माण, दूसरों के लिए रोजगार खोलना आदि।

विद्यार्थी 3— स्वावलंबन से नौकरशाही जैसी समस्या भी कमजोर पड़ती है।

विद्यार्थियों की उपर्युक्त विचाराभिव्यक्ति का मूल विद्यालय है, लेकिन विद्यार्थियों ने अपने चिंतन में जिस ढंग से इसे आत्मसात किया है वह अनूठा है।

वे किसी रटी-रटाई परिभाषा की पुनरावृत्ति नहीं कर रहे हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ और आदर्श के सापेक्ष इस मूल्य की व्याख्या कर रहे हैं। ये व्याख्याएँ उनके द्वारा सतत मनन और आत्म जागरूकता का परिणाम हैं। इसके माध्यम से वे जिन नैतिक मूल्यों और व्यवहारों को अपने लिए कसौटी मानते हैं, उसकी व्याख्या करते हैं। एक मनन-सत्र में विद्यार्थियों के साथ चर्चा की गई कि आनंद निकेतन का विद्यार्थी होने के कारण उनके व्यक्तित्व और व्यवहार की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए। इस मनन-सत्र में विद्यार्थियों ने सबसे पहले अपने कार्य को स्वयं करने, परिवार, विद्यालय और पड़ोस की स्वच्छता सुनिश्चित करने, दूसरों की मदद करने जैसी विशेषताओं को बताया। इसी क्रम में अहिंसा और सर्वधर्म समभाव को भी उन्होंने अपने लिए अपेक्षित विशेषता बताई। इस सत्र में विद्यार्थियों के विचार प्रमाण है कि वे अनुगामी मात्र नहीं हैं, बल्कि उनके पास एक दृष्टि है, जो उनके कार्य-व्यवहार में परिलक्षित हो रही है। वे इस मनन दृष्टि को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। यह मनन दृष्टि स्वार्थाधारित न होकर मूल्याधारित है।

समस्या समाधान और सुविचारित निर्णय लेना

मनन-सत्रों के अवलोकनों से प्रकट होता है कि इसके द्वारा विद्यार्थियों में समस्या समाधान कौशल का विकास हुआ। इसका प्रथम संकेतक है कि विद्यार्थियों ने अपनी कक्षा और विद्यालय की समस्याओं की पहचान कर उसे मनन-सत्र में सम्मिलित किया और उसके समाधान के उपायों को क्रियान्वित भी किया। इस दौरान शिक्षकों ने खुद को सीधे तौर पर आदेश देने

की भूमिका से दूर रखा। वे मनन-सत्रों में उपस्थित रहे, लेकिन किसी 'वयस्क' या 'शिक्षक' की तरह अंतिम फैसला नहीं दिया। इन मनन-सत्रों को विद्यार्थियों ने स्वयं संचालित किया। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों ने देखा कि सायंकाल में जब विद्यालय में साफ-सफाई का कार्य किया जाता है, तो इस समय उनके कुछ साथी सफाई के लिए नहीं जाते हैं और वे खेलते हैं। इन्होंने इस समस्या की पहचान कर उसे मनन-सत्र में रखा। इस सत्र में शिक्षक के स्थान पर विद्यार्थियों के एक समूह ने ही चर्चा के सवाल को तैयार कर कक्षा के सामने रखा। ये सवाल थे— क्यों कुछ लोग सफाई के लिए जाते हैं और कुछ लोग नहीं जाते हैं? क्या सफाई का कार्य विद्यार्थियों के दायित्व का हिस्सा है? और क्यों? हमें साफ-सफाई पर और उससे जुड़ी अपनी जिम्मेदारियों पर कैसे खरा उतरना है? ये प्रश्न संवाद की संभावना लिए हुए थे। इनमें किसी मतारोपण के स्थान पर दूसरे पक्ष को अपने विचार रखने का अवसर मिलता है। इन प्रश्नों के कारण चर्चा आगे बढ़ती है और जो विद्यार्थी सफाई कार्य से अनुपस्थित रहते थे, वे बिना किसी भय और हिचकिचाहट के अपना विचार रखते हैं—

“सफाई की वजह से खेलने का समय नहीं मिलता है और खेलना जरूरी है।”

“खेलते समय हम भूल जाते हैं कि हमें सफाई भी करनी है।”

“खेलना हमारे समग्र विकास का हिस्सा है, हम विद्यालय की ओर से खेलते हैं।”

स्पष्ट है कि इस मनन-सत्र में समस्या को विविध दृष्टिकोणों से समझा जा रहा था। चर्चा में वैचारिक

खुलेपन और नेगोशिएसन के लिए स्थान था। इसी कारण विद्यार्थी पढ़ाई के द्वारा खेल के पक्ष में खड़े थे। इसी तरह सफाई कार्य के समर्थन में विद्यार्थियों द्वारा सफाई हमारे परिवेश, हमारे स्वास्थ्य आदि सब को साफ रखने में मदद करती है, और यह हमारे अच्छे आचरण का संकेतक भी है, जैसे विचार साझा किए। लेकिन यहाँ वास्तविक समस्या खेलने और सफाई करने में से किसी एक विचार को स्वीकार करने और दूसरे को खारिज करने की नहीं थी। बल्कि समस्या थी कि कुछ विद्यार्थियों को खेलने का मौका क्यों मिले और कुछ को नहीं। इस तरह से विविध दृष्टिकोणों पर विचार करते हुए समूह समस्या के मूल की ओर बढ़ रहा था— आनंद के अवसर में भागीदारी की असमानता। समूह ने इस पर विचार कर वैकल्पिक रास्ता अपनाया। इस समूह ने समय सारिणी में बदलाव का सुझाव दिया। इसके अंतर्गत कक्षा को दो समूहों में रखते हुए प्रत्येक समूह को वैकल्पिक कार्य दिवस में सफाई और खेल का अवसर दिया गया। यह समाधान सभी को स्वीकार्य था।

समसामयिक और स्थानीय महत्व के मुद्दों पर चर्चा

आनंद निकेतन में संचालित मनन-सत्रों में सर्वाधिक चर्चा समसामयिक और स्थानीय महत्व के मुद्दों पर होती है। इन सत्रों में विद्यार्थियों की विश्वदृष्टि प्रकट होती है। इन मनन-सत्रों में बल दिया जाता है कि विद्यार्थी स्थानीय समुदायोन्मुख फैसलों को तय कर उन्हें कार्यरूप दें। उदाहरण के लिए, दीपावली त्योहार के अवकाश से पहले ‘दीपावली, पटाखे और प्रदूषण’ विषय पर मनन-सत्र का आयोजन किया गया। इस

विषय का चयन अध्यापक द्वारा किया गया था। अध्यापक ने समूह के संमुख अपनी प्रस्तावना को रखते हुए सवाल उठाए कि क्या हमारा आनंद करने का तरीका, जैसे— पटाखे फोड़ना, क्या पर्यावरण के अनुकूल है? क्या मनोरंजन का यही एकमात्र तरीका है? क्या हम आनंद के दौरान दूसरों के बारे में सोचते हैं? दीपावली पर पटाखे न फोड़ने के वैकल्पिक रास्ते क्या हो सकते हैं? इन सवालों पर कक्षा में मनन किया गया। इस दौरान मनुष्य के साथ-साथ जीव जगत के लिए समानुभूति का भाव रखते हुए एक विद्यार्थी ने कहा कि ‘मुझे लगता है कि पटाखे केवल पर्यावरण प्रदूषण को ही नहीं बढ़ाते, बल्कि हमारी पूरी पारिस्थितिकी पर चिंताजनक असर डालते हैं। हमारे जानवर-पशु-पक्षी एवं अन्य छोटे-बड़े जीव-जंतु जो रात में विश्राम करते हैं, उनके लिए यह खतरनाक होता है।’ उक्त विचार के समर्थन में कुछ विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए, जैसे— पालतू जानवरों का बेचैन हो जाना, इधर-उधर भागना, आवाजें करना आदि। विद्यार्थियों ने पटाखों के कारण श्वास संबंधित बीमारियों के बारे में भी राय व्यक्त की। विशेषरूप से वृद्धों और बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित चिंताओं को संज्ञान में लिया। तीन-चार विद्यार्थियों द्वारा पटाखों और प्रदूषण, पटाखों और स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं पर विचार रखने के बाद स्वाभाविक रूप से कक्षा के एक विद्यार्थी ने कहा कि इन समस्याओं को तो हम सभी जानते हैं। हमें इसके समाधान के लिए रास्ते खोजने की जरूरत है। इस मताभिव्यक्ति के साथ समूह ने समाधान के विकल्पों पर विचार आरंभ किया।

समाधान के विकल्पों पर चर्चा के दौरान एक विद्यार्थी द्वारा पहला विचार आया कि हमें पटाखों

के प्रयोग पर रोक लगा देनी चाहिए। प्रथम दृष्टया यह विचार पर्यावरण अनुकूल और क्रियान्वयन की दृष्टि से सरलतम लग रहा है। लेकिन समूह के कुछ विद्यार्थियों ने इससे असहमति व्यक्त की, जैसे— एक विद्यार्थी ने कहा कि पटाखों को बेचना कुछ लोगों के लिए रोजगार होता है। यदि इस पर रोक लगा दी जाएगी, तो उनका रोजगार छीन जाएगा। एक अन्य विद्यार्थी ने कहा कि इससे बच्चों को आनंद आता है, इस कारण हमें प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। इस तरह के प्रतिवादी विचारों ने मनन-सत्र का विस्तार किया। इन्हीं विद्यार्थियों ने विकल्प भी बताए, जैसे— पहले विद्यार्थी ने कहा कि पटाखा बेचने वालों को वैकल्पिक रोजगार के अवसरों से परिचित करा जाए। उन्हें दीपावली के अवसर पर दूसरे सामानों को बेचकर लाभ कमाने का रास्ता बताया जाए। दूसरे विद्यार्थी ने कहा कि हमें ग्रीन पटाखों और कम आवाज वाले पटाखों पर विचार करना चाहिए। इस मत में नया पक्ष जोड़ते हुए समूह के एक सदस्य ने कहा कि आनंद के लिए हम कोई और खेल या अन्य उपाय भी सोच सकते हैं। इसी समूह के अन्य सदस्य का मानना था, पटाखें गाँव और घर से दूर फोड़े जाएँ। इस पर पुनः प्रतिवाद आया कि घर से दूर इस गतिविधि को करने पर क्या आनंद आएगा? विचारों का यह क्रम चलता रहा। समूह ने अपने लिए कुछ फैसले लिए, जैसे— दीपावली पर पटाखें न जलाएँ। यदि जलाते हैं तो कम आवाज वाले पटाखों का प्रयोग हो। अपने घरों पर ‘ग्रीन दीपावली’ के पोस्टर लगाएँ और इसके महत्व से पड़ोसियों को परिचित कराएँ।

इसी तरह एक मनन-सत्र में ‘मैं और मीडिया’ विषय पर चिंतन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने मीडिया के लाभ-हानि दोनों पर विचार रखे। मीडिया के खान-पान, वेश-भूषा और पढ़ाई पर पढ़ने वाले प्रभावों पर विचार किया। दुष्प्रचार को फैलाने में मीडिया की भूमिका, वयस्क फिल्मों की आलोचना, सोशल मीडिया पर अत्यधिक संलग्नता जैसे पक्षों पर बहस हुई।

मनन-सत्र— प्रतीकात्मक या सार्थक?

उपर्युक्त अवतरणों में आनंद निकेतन में संचालित मनन-सत्र के अवलोकनों के आधार पर उनकी विशेषताओं पर चर्चा की गई है। मूल सवाल है कि क्या ये मनन-सत्र केवल प्रतीकात्मक थे या इनके कुछ महत्वपूर्ण निहितार्थ निकले? इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि विद्यालय के भीतर शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच वयस्क और बच्चे के संबंध और इसके पदानुक्रम को समाप्त कर बराबरी का संबंध विकसित हो, यह एक आदर्श परिकल्पना है। आनंद निकेतन इस दिशा में आगे बढ़ते हुए इन दोनों हितधारकों के बीच सत्ता आधारित संबंध के अंतराल को कम कर रहा है, लेकिन पूर्णतया समाप्त नहीं कर सका है। कई मनन-सत्रों में केवल विद्यार्थियों के विचार सुने गए। कुछ सत्र ऐसे रहे जिनमें शिक्षक हावी रहा। फिर भी, इन मनन-सत्रों में बदलाव की संभावना साकार होती दिखी। इसके माध्यम से विद्यार्थियों ने अपने साथियों, अध्यापकों और विद्यालय के साथ संबंध पर विचार करते हुए अपनी भूमिका को केंद्र में रखा। यहाँ ‘अच्छा’ या ‘खराब’ का निर्णय देने की प्रवृत्ति

नहीं थी, बल्कि इन रिश्तों का महत्व और इनके बीच समानुभूति पर बल था जो व्यक्ति के आत्म-बोध को सशक्त कर रहा था। इन सत्रों में विचाराभिव्यक्ति का तात्पर्य स्वयं का मत व्यक्त कर देना मात्र नहीं था, बल्कि एक समूह द्वारा किसी केंद्रीय विचार पर हो रही चर्चा में व्यक्तिगत हस्तक्षेप करना भी था। इससे विद्यार्थी समूह के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करते थे। उसकी विचाराभिव्यक्ति समूह में अभिव्यक्त अन्य विचारों के सापेक्ष होती थी। इसके लिए ध्यान से सुनना, दूसरों के विचारों का संक्षिप्तीकरण या सारांश में प्रस्तुत करना, विश्लेषित और व्याख्यायित करना, और आलोचना करना जैसे अभ्यास होते थे। इसके साथ ही वे मिलकर लिए गए फैसलों को भी क्रियान्वित करते थे।

मनन-सत्रों की सबसे बड़ी सफलता अध्यापक की उपस्थिति में कक्षा और विद्यालय के अभ्यासों की आलोचना है। इसके लिए शिक्षकों की सराहना की जानी चाहिए जिन्होंने विद्यार्थियों के लिए ऐसे अवसर बनाए कि वे स्वतंत्रता पूर्वक आलोचना कर सकें और वे अपनी आलोचनाओं को ध्यानपूर्वक सुनकर उसके आधार पर अपेक्षित बदलाव करें। मनन-सत्रों में भागीदारी के कारण कक्षा शिक्षण से संबंधित कुछ तात्कालिक निर्णय लेकर उन्हें क्रियान्वित किया गया। समय सारिणी में बदलाव, अध्यापक के साथ बर्ताव में सुधार और कक्षा को व्यवस्थित रखने की कार्य योजना का पालन इसके उदाहरण हैं। इन सत्रों ने अध्यापकों के नजरिये में भी बदलाव किया। उन्होंने विद्यार्थियों को 'बच्चा' और 'अपरिपक्व' मानने के स्थान पर उन्हें विचारवान सहयोगी मानना प्रारंभ किया।

निहितार्थ

जिस तरह से आनंद निकेतन ने सोदेश्य ढंग से विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण हितधारक मानते हुए उनके हस्तक्षेप की संभावनाओं का मंच तैयार किया है, वैसे ही अन्य विद्यालयों में भी किया जा सकता है। प्रस्तुत कार्य के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के विचारों अनुभवों और विश्वासों आदि को विद्यालय की अधिगम-संस्कृति का हिस्सा बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव क्रियान्वित किए जा सकते हैं—

- विद्यार्थियों को कक्षा, विद्यालय और समुदाय से संबंधित उन विषयों पर विचार करने का अवसर दिया जाए जो उनके आनुभविक एवं दैनंदिन दुनिया का हिस्सा है। विशेष रूप से कक्षा शिक्षण और विद्यालय की गतिविधियों के बारे में उन्हें विचार विमर्श करने, फैसला लेने और लागू करने का मौका दिया जाए।
- विद्यार्थियों के विचारों को सुनते समय यह ध्यान रखा जाए कि उनकी पारिवारिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की भिन्नता, जो विचारों के माध्यम से प्रकट हो रही है, उसकी सराहना हो।
- मनन-सत्र जैसे मंचों के माध्यम से स्थानीय समुदाय के स्तर पर हस्तक्षेप की लघु योजनाओं को तैयार किया जाए।
- यह ध्यान रखा जाए कि विद्यार्थी मनन-सत्र जैसी गतिविधियों में प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग व समानुभूति के भाव को बढ़ावा दिया जाए।
- इन गतिविधियों को अतिसंरचित न किया जाए। किसी भी गतिविधि की कठोर संरचना से विचारों की स्वतंत्रता और प्रवाह बाधित होता है।

- मनन-सत्र जैसी गतिविधियों की सफलता के लिए अध्यापकों की मनोवृत्ति, परिप्रेक्ष्य और सोचने के तरीके में बदलाव की आवश्यकता है। इन सत्रों के सफल संचालन के लिए आवश्यक है कि अध्यापक बातचीत और अंतःक्रिया के लिए लोकतांत्रिक शैली में विश्वास करें और उसे प्रोत्साहित करें वे विद्यार्थियों को समर्थ और उन्हें विद्यालय और कक्षा की निर्णय प्रक्रिया का अंग बनाने की कोशिश करें।
- अध्यापक मनन-सत्रों के पूर्व और उपरांत तैयारी करते समय विद्यार्थियों के लिए संबंधित विषय से संबंधित लेख, एवं ऑडियो विजुअल सामग्री का प्रयोग भी कर सकते हैं।
अंततः हमें ध्यान रखना होगा कि एक सौहार्द्रपूर्ण माहौल में, अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से, तादात्म्य और समानुभूति के साथ विचारों की विविधता का स्वागत और सराहना विद्यार्थियों के भीतर यह साहस पैदा करता है कि वे बदलाव के कर्ता हैं।

संदर्भ

- कुक-साथर, ए. 2006. साउंड, प्रजेंस एंड पॉवर : स्टूडेंट वायस इन एजुकेशनल रिसर्च एंड रीफॉर्म. *करिकुलम इन्क्वायरी*. 36(4), पृ.सं. 259–390.
- जीरू, एच. 1992. *बार्डर क्रॉसिंग : कल्चरल वर्क्स एंड द पॉलिटिक्स ऑफ एजुकेशन*. रटलेज, लंदन.
- फील्डिंग, एम. 2007. बिआंड 'वायस' न्यू रोल्स, रिलेशंस एंड कॉन्टेक्स्ट इन रिसर्चिंग विद यंग पीपल. *डिस्कॉर्स : स्टडीज इन द कल्चरल पॉलिटिक्स ऑफ एजुकेशन*. 28(3), पृ.सं. 301–310.
- फ्लूटर, जे. 2007. टीचर डेवलपमेंट एंड प्यूपिल वायस. *करिकुलम जर्नल*. 18(3), पृ.सं. 343–354.
- और जे. रूडक. 2004. *कंसल्टिंग पीपल्स : व्हाट्स इन इट फॉर स्कूल्स?* रटलेज पॉल्मर, लंदन.
- मित्रा, डी.एल. 2006. इन्क्रीजिंग स्टूडेंट वायस एंड मूविंग टुवर्ड्स यूथ लीडरशिप. *द प्रीवेंशन रिसर्चर*. 13(1), पृ.सं. 7–10.